



आज का विचार

आज का विचार

1.	कभी-कभी सम्मान देना ही सबसे बड़ा योगदान सिद्ध होता है।
2.	जैसे बात में अपना विवेक खोता है, वह कभी नहीं करना है।
3.	अब समस्या स्वरूप नहीं समाधान स्वरूप बनो और बनाओ।
4.	गंभीरता का गुण धारण कर लो तो व्यर्थ टकराव से बच जायेंगे।
5.	विशेषतार्ये व गुण दाता की देन हैं, दाता को देखो, व्यक्ति को नहीं।
6.	एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सकता है।
7.	जो सदा सन्तुष्ट है, वही सदा हर्षित एवं आकर्षणमूर्त है।
8.	दिव्य गुण ही मानव का सच्चा श्रृंगार है। कर्म इन्द्रियों पर राज्य करने वाला ही सच्चा राजा है।
9.	स्वभाव को सरल बनाओ तो समय व्यर्थ नहीं जायेगा ।
10.	यह संसार हार-जीत का खेल है, इसे नाटक समझ कर खेलो।
11.	“सत्य कर्म ” युद्ध-क्षेत्र में जीतने का पहला साधन है।
12.	स्वयं को ट्रस्टी समझ कर चलो तो हल्केपन का अनुभव होगा।
13.	मनोविकारों पर विजय प्राप्त करना ही आत्मा की सच्ची स्वतन्त्रता है।

14.	दूसरों को खुशी देना सर्वोत्तम दान है।
15.	जो हर्षितमुख है, वह स्वयं भी प्रसन्न रहता है और दूसरों के चेहरे पर भी मुस्कान ले आता है।
16.	मुस्कान हर मुश्किल कार्य को आसान कर देती है।
17.	जो प्रसन्न रहते हैं, उनके मन में कभी आलस्य नहीं आता। आलस्य एक बहुत बड़ा विकार है।
18.	सन्तुष्टता व खुशी साथ-साथ रहते हैं। इन गुणों से दूसरे आपकी ओर स्वतः आकर्षित होंगे।
19.	हर्षितमुखता चेहरे का सच्चा सौंदर्य है। चिड़चिड़े स्वभाव का व्यक्ति वास्तव में कुरूप है।
20.	जीवन एक नाटक है, यदि हम इसके कथानक को समझ लें तो सदैव प्रसन्न रह सकते हैं।
21.	सभी परिस्थितियों में सन्तुलन बनाये रखना प्रसन्नता की चाबी है।
22.	दुःखों से भरी इस दुनिया में वास्तविक सम्पत्ति धन नहीं, सन्तुष्टता है।
23.	ईमानदार व सच्चे दिल वाला व्यक्ति स्वयं को सदा हल्का व तनावमुक्त अनुभव करता है।
24.	अपनी इन्द्रियों पर सम्पूर्ण नियन्त्रण ही सच्ची विजय है।
25.	अपने दुःखों को भूलने के लिए परमात्मा को याद करो।
26.	अपने मन को स्थिर रखकर सभी परिस्थितियों में धैर्य बनाये रखें।
27.	विकट समस्याओं का आसान हल ढूँढ निकालना सबसे मुश्किल काम है।
28.	जो स्वयं को हर परिस्थिति के अनुसार ढालना जानता है, उसे जीवन जीने की कला आ जाती है।
29.	यदि समस्याएँ आने पर आप घबरा जाते हैं तो इससे आपके दिमाग का सन्तुलन बिगड़ जायेगा।

30.	अगर आप हर कार्य खुशी से करें तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं लगेगा।
31.	यदि भरसक प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलती तो परमात्मा पर छोड़ दें।
32.	अपनी सारी आशायें भगवान पर छोड़ दें, तब किसी भी व्यक्ति से कोई निराशा नहीं मिलेगी।
33.	जो भविष्य था वह अब हो रहा है, जो अब हो रहा है वह अतीत बनता जा रहा है तो चिन्ता किसलिए की जाये।
34.	जो व्यक्ति नम्रता के आधार पर सबसे तालमेल बनाये रख सकता है, वह महान है।
35.	मानसिक शान्ति का आनन्द प्राप्त करने के लिए मन को व्यर्थ की उलझनों में फँसने नहीं दो।
36.	ईमानदार व्यक्ति स्वयं से स्वयं भी संतुष्ट रहता है तथा दूसरे भी उससे संतुष्ट रहते हैं।
37.	जो सच्ची लगन से हर कार्य करते हैं उनके विचारों, वाणी व कर्मों पर पूर्ण आत्मविश्वास की छाप लग जाती है।
38.	दो सबसे महान चिकित्सक हैं - परमात्मा और समय ।
39.	नैतिक, आध्यात्मिक व मानवीय मूल्यों को स्थापित किये बिना सच्ची स्वतंत्रता असंभव है।
40.	जब आप क्रोधित होते हैं तो बहुत सारी शक्ति नष्ट हो जाती है, अतः शक्ति का प्रयोग बुद्धिमता से करें।
41.	मौन से मस्तिष्क को आराम मिलता है और इसका अर्थ है शरीर को आराम मिलना।
42.	कभी-कभी सिर्फ आराम रूपी औषधि की ही शरीर को आवश्यकता होती है।
43.	शांति व सहनशीलता वातानुकूलित कक्ष जैसी शीतलता प्रदान करती है, इनसे मनुष्य की कार्यक्षमता बढ़ती है।
44.	चिन्ताग्रस्त व्यक्ति मृत्यु से पहले कई बार मरता है।

45.	सफलता मन की शीतलता से उत्पन्न होती है। ठण्डा लोहा ही गर्म लोहे को काट व मोड़ सकता है।
46.	भय को दूर भगाने के लिए ज्ञान व विवके की प्राप्ति ही एकमात्र उपाय है।
47.	धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो थोड़ा सा गया, अगर चरित्र गया तो सब कुछ ही चला गया।
48.	परमात्मा को पाने के बाद और कुछ पाने की आवश्यकता नहीं रह जाती ।
49.	जन्म का अन्त है मृत्यु, और मृत्यु का अन्त है जन्म ।
50.	परमात्मा में असीम शक्ति है, अगर आपके मन पर कोई बोझ है तो उसे परमात्मा को दे दो।
51.	यदि मैं अपनी प्रशंसा सुनकर खुश होता हूँ तो निन्दा से मुझे दुःख भी अवश्य होगा।
52.	स्वतन्त्रता के नियमों को स्वीकार करने के बाद ही आपको स्वतन्त्र कहलाने का अधिकार है।
53.	जहाँ बुद्धि प्रयोग करने की आवश्यकता है, वहाँ बल प्रयोग करने से कोई लाभ नहीं होता।
54.	शान्ति को बाहर खोजना व्यर्थ है, क्योंकि वह तो आपके गले में पहना हुआ हार है।
55.	शान्त स्वभाव वाले व्यक्ति को मूर्ख बनाना असम्भव है।
56.	क्रोध की आग बुझाना ही यथार्थ में मस्तिष्क के तापमान का नियन्त्रण है।
57.	यदि हम शान्ति का समर्थन करना चाहते हैं तो हमें इसके लिए चीखने-चिल्लाने की क्या आवश्यकता है ?
58.	कल्पनायें एक खूँखार शेर की तरह हैं, इसे उग्र मत बनने दें।
59.	गुलाब का फूल काँटों के बीच भी सुरक्षित रहता है, आपका अपने बारे में क्या विचार है ?

60.	क्रोध मनुष्य को पागल बना देता है, तो क्यों न हम विवक से काम लें ?
61.	क्रोधी व्यक्ति वास्तव में स्वयं के साथ भी क्रोधित रहता है।
62.	आप जितना कम बोलेंगे, दूसरे व्यक्ति उतना ही अधिक ध्यान से सुनेंगे।
63.	यदि आप हर कार्य पूरी लगन से करते हैं तो आपको कभी पछताना नहीं पड़ेगा।
64.	जब जीवन में हर परिस्थिति का सामना करना ही है तो प्रेम से सामना क्यों न करें ?
65.	सदा नम्रता की पोशाक पहने रहिए, इससे दूसरों का प्रेम व सहयोग स्वतः ही मिलेगा।
66.	आदर प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि पहले आप दूसरों का आदर करें।
67.	दूसरों की सफलता के प्रति भी उतना ही उत्साह दिखायें, जितना आप अपनी सफलता के प्रति दिखाते हैं।
68.	मीठा बोलने में एक कौड़ी भी खर्च नहीं होती, इसलिए सदा प्रेमयुक्त, मधुर व सत्य वचन बोलें।
69.	सबको सम्मान देने वाला व्यक्ति सदा स्वमान में रहता है।
70.	परमात्मा ने हमें खुशबूदार फूल बनाया है, क्या हम यह खुशबू सब तक फैला रहे हैं ?
71.	अन्य आत्माओं को प्रेम व दया का दान भी एक तरह का दान ही है।
72.	चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बुरा हो, उसमें कोई न कोई गुण अवश्य होता है।
73.	मधुमक्खी की तरह गुणों रूपी मिठास एकत्र करते रहें।
74.	जब कोई कार्य प्रेमभाव के साथ किया जाता है तो उसमें तत्काल सफलता मिलती है।
75.	किसी भी वस्तु की सुन्दरता आपकी मूल्यांकन करने की योग्यता में छिपी हुई है।
76.	सबके प्रति समान स्नेह रखने से आप धैर्य का जीवन जी

	सकते हैं।
77.	हम जिससे प्रेम करते हैं, हमारा स्वरूप व व्यक्तित्व वैसा ही बन जाता है।
78.	परमात्मा से प्रेम करना समस्त मानव जाति से प्रेम करना है।
79.	एक उदार हृदय शीघ्र ही अमूल्य हृदय बन जाता है।
80.	प्रेम के आँसू दुःख नहीं पहुँचाते, वे तो मोती बन जाते हैं।
81.	परीक्षा की घड़ी मनुष्य को महान बनाती है, विजय की घड़ी नहीं।
82.	एक ईमानदार व्यक्ति कभी किसी अंजान व्यक्ति की नजरों से भयभीत नहीं होता ।
83.	विपत्ति आने पर हिम्मत बनाये रखना सबसे अच्छा उपाय है।
84.	जीवन में सबसे बड़ा प्रश्न है - मृत्यु। मृत्यु का उत्तर है - जीवन
85.	परमात्मा में दृढ़ विश्वास का अर्थ है - निर्भयता ।
86.	निर्बल व खाली मन कभी भी समर्थ संकल्प उत्पन्न नहीं कर सकता।
87.	आत्म-नियन्त्रण से असीम नियन्त्रण शक्ति प्राप्त होती है।
88.	यदि आपके मार्ग में कोई विघ्न आये तो घबराना छोड़ इसे दूर करने का प्रयास करते रहिए।
89.	घोर संकट के समय भी मुस्कराते रहना संतुलित मन की निशानी है।
90.	कभी भी आशा न छोड़ें। आशा एक ऐसा पथ है जो जीवनभर आपको गतिशील बनाये रखता है।
91.	बहुत से लोग सोचते बहुत हैं व बोलते भी बहुत हैं, किन्तु जब करने का समय आता है तो पीछे हट जाते हैं।
92.	संयम सन्तुलन और सन्तुष्टता का गुण अपनाने से महान बन जायेंगे।
93.	ध्यान देने की कमी से त्रुटियाँ होती हैं व तनाव पैदा होता है।
94.	अल्पबुद्धि व्यक्ति थोड़ा-सा ज्ञान प्राप्त कर लेने पर ही स्वयं

	को महान विद्वान समझने लगता है।
95.	ज्ञान सबसे बड़ा धन है । स्वयं से पूछे- “ मैं कितना धनवान हूं ?
96.	हमारे वचन चाहे कितने भी श्रेष्ठ क्यों न हों, परन्तु दुनिया हमें हमारे कर्मों के द्वारा पहचानती है।
97.	समय ही जीवन है। समय को बरबाद करना अपने जीवन को बर्बाद करने के समान है।
98.	किसी दूसरे व्यक्ति की आलोचना करने से पहले हमें अपने अन्दर झाँक कर देख लेना चाहिए।
99.	दर्पण में आप अपना चेहरा देख सकते हैं, चरित्र नहीं।
100.	कौन-सी चीज अधिक महत्वपूर्ण है - आपका जीवन स्तर या उचित आदर्शों वाला जीवन ?